दैनिक नैतिक प्रभात

(बाल कहानी संग्रह) मार्च - 2024

मिशन शिक्षण संवाद
दैनिक नैतिक प्रभात
(बाल कहानी संग्रह)

अनुक्रमणिका माह मार्च - 2024

क्रमांक	बाल कहानी	लेखक	पृष्ठ संख्या
1	भरत का विलाप	प्रशान्त शर्मा	1
2	असर उत्सव का	सरिता तिवारी	2
3	मिली के खिलौने	शिखा वर्मा	3
4	कबूतरों का झुण्ड	शमा परवीन	4
5	वफादार कुत्ता	अंजनी अग्रवाल	5
6	बाल-वाटिका	धर्मेन्द्र शर्मा	6
7	शिक्षा	रचना तिवारी	7
8	गुल्लक	शिखा वर्मा	8
9	मोबाइल	शमा परवीन	9
10	आलसी मोहित	दमयन्ती राणा	10
11	मित्रता	सीमा द्विवेदी	11
12	कन्या-रत्न	जुगल किशोर त्रिपाठी	12
13	वार्षिक प्रतियोगिता	धर्मेन्द्र शर्मा	13
14	समझौता नहीं	प्रवीणा दीक्षित	14
15	खिलौने	शमा परवीन	15
16	पौष्टिक तत्व	शिखा वर्मा	16
17	गहरी मित्रता	दमयन्ती राणा	17
18	जंगल की सैर	जुगल किशोर त्रिपाठी	18
19	फर्ज और कर्तव्य	पुष्पा शर्मा	19
20	मुरझायी फसलें	शिखा वर्मा	20
21	चिन्टू का गाँव	शमा परवीन	21
22	रुचि	जुगल किशोर त्रिपाठी	22
23	पेन्सिल	शमा परवीन	23

संस्कार संदेश दिनांक - 01.03.2024

दैनिक नैतिक प्रभात - 35/2024

बाल कहानी दिन - शुक्रवार

मिशन शिक्षण संवाद

भरत का विलाप

भरत और शत्रुघ्न दोनों अपने ननिहाल गए हुए थे। अचानक अयोध्या के दूत वहाँ पहुँच गये और भरत को सन्देश दिया कि- "गुरु वशिष्ठ ने शीघ्र ही आपको अयोध्या बुलाया है।" भरत ने दूत से पूछा कि- "उनके माता-पिता एवं भाई, अयोध्यावासी सब सकुशल तो हैं न?" परन्तु गुरु के आदेश को मानते हुए दूत ने सत्य छिपा लिया और कहा कि- "सब कुछ सकुशल है। उन्होंने शत्रुघ्न सहित तत्काल अपने मामा से विदा होने की आज्ञा लेकर अयोध्या की ओर प्रस्थान किया। सात दिन की यात्रा के पश्चात भरत अयोध्या में प्रवेश कर गये। कैकेयी भरत के आने का समाचार पाकर पुत्र का स्वागत करने के लिए आयी। उसने प्रसन्नता से भरत का मस्तिष्क चूमकर उसे आशीष दिया। भरत ने अपनी माँ से पूछा- "माँ! पिताजी, राम-लक्ष्मण एवं माताएँ आदि सब कहाँ हैं, क्या उन्हें मालूम नहीं चला की भरत आ गया है?" कैकेयी ने संयत स्वर में भरत को महाराज दशरथ की मृत्यु का समाचार सुनाया। इस दु:खद समाचार को सुनते ही भरत अपने आप को संभाल नहीं पाये और मूर्छित होकर गिर पड़े। कैकेयी ने किसी प्रकार भरत को संभाला। कैकेयी ने सब बात भरत को बतायी कि, "महाराज ने मुझे दो वर माँगने का वचन दिया था। महाराज राम का राज अभिषेक करने जा रहे थे, इसीलिए मैंने महाराज से अपने दोनों वर माँगे। महाराज से पहले वचन में तुम्हारे लिए अवध का राज्य माँगा । दूसरे वचन में राम के लिए चौदह वर्ष का वनवास माँगा। महाराज पहले वचन के लिए मान गए, परन्तु पुत्र-प्रेम के कारण दूसरा वचन सुनते ही उनकी चेतना खो गयी। जब यह बात राम को पता चली तो उसने पिता के वचन को सत्य करने के लिए लक्ष्मण और सीता सहित वन गमन किया। महाराज यह सहन नहीं कर सके और स्वर्ग सिधार गये।" भरत यह सब सुनकर अत्यन्त विलाप करने लगे। तभी कौशल्या और सुमित्रा भी भरत के अयोध्या आने की सूचना सुनकर वहाँ आती हैं। वे भरत को गले लगाकर विलाप करने लगीं। माता की ऐसी दशा देखकर भरत स्वयं को धिक्कारने लगा। भरत माता कैकेयी के प्रति घृणा से उन पर क्रोधित हो उठते हैं। भरत को माताएँ समझाती हैं। भरत अपने पिता राजा दशरथ का अन्तिम संस्कार करने के लिए चल देते हैं और पिता का मृत शरीर देखकर भरत विलाप करने लगते हैं। गुरु वशिष्ठ उन्हें समझाते हैं कि- "जन्म और मृत्यु जीवन के अंग है। इस संसार में जन्म- मरण और नाश निर्माण साथ-साथ चलते हैं। हे!भरत तुम जैसा महान व्यक्ति को इस प्रकार विलाप करना उचित नहीं है। अपने पिता का अन्तिम संस्कार करो और अपने पुत्र होने का कर्तव्य निभाओ।" भरत अपने पिता के मृत्यु शरीर का अन्तिम संस्कार करते हैं।

संस्कार सन्देश-

हमें स्वार्थवश किसी का अधिकार नहीं छीनना चाहिए, अन्यथा महान अनर्थ होता है।

लेखक-

प्रशांत शर्मा

भ० प्र० दौलतराम म० वि० सिराथू,प्रयागराज

संस्कार सदेश दिनांक - 02.03.2024
दैनिक नैतिक प्रभात - 36/2024
बाल कहानी दिन - शनिवार
मिशन शिक्षण संवाद

असर उत्सव का

अगस्त महीने की पन्द्रह तारीख थी। पूरे देश में स्वतन्त्रता दिवस का उत्सव लगभग एक सप्ताह से चल रहा था। विद्यालय तथा ग्राम सभा से निकलने वाली रैलियाँ सबको आकर्षित कर रही थीं। हर घर तिरंगा लहरा रहा था। सभी देशप्रेम में सराबोर हो रहे थे। लगभग बेजुबान हो चुकी सलोनी नाम की एक लड़की थी। जो स्वतन्त्रता दिवस के सभी उत्सव दृश्यों को देखकर बहुत खुश हो रही थी। सलोनी जन्म से बेजुबान नहीं थी, बल्कि हालातों ने उसे ऐसा कर दिया था।

एक बार उसके पिताजी दशहरे का मेला देखने उसकी माँ और उसके साथ बाइक से शहर जा रहे थे। एक ट्राली की जोरदार टक्कर से वह माँ की गोदी से उछलकर दूर जा गिरी थी तथा उसके माता-पिता सड़क पर गिरे थे, जिन्हें पीछे से आ रही बेकाबू ट्रक रौंदकर चली गयी। लहूलुहान उन दोनों ने वहीं दम तोड़ दिया। इस दुर्घटना का उसके मन पर बहुत बुरा असर हुआ जिससे उसकी आवाज गायब सी हो गयी। डर के मारे वह तबसे कहीं बाहर निकलना भी पसन्द नहीं करती, लेकिन आज वह खुशी-खुशी तैयार होकर अपनी दादी से स्कूल के लिए चलने का आग्रह करने लगी। उसका आग्रह उसकी दादी टाल न सकी और उसे गाँव के स्कूल में 'स्वतन्त्रता दिवस' का कार्यक्रम दिखाने ले गयी। झण्डारोहण के बाद अनेक सांस्कृतिक कार्यक्रम हुए, जिसमें एक कार्यक्रम था, 'मेरी माटी, मेरा देश'। जिसमें सभी बच्चे हाथ में मिट्टी और पौधा लेकर खड़े थे और बोल रहे थे-

"मेरी माटी मेरा देश।
हमें बनाना इसे विशेष।।"

प्राँगण में उपस्थित सभी लोग इसे दोहराने लगे। अचानक सबके साथ सलोनी भी देश-प्रेम के इस नारे को बड़े ही जोश और उमंग के साथ बोलने लगी। यह देखकर उसकी दादी के साथ-साथ अन्य सभी लोग बहुत खुश हुए और कहने लगे- "अरे! सलोनी की आवाज वापस आ गयी। उसकी दादी का दामन आँसूओं से भीग रहा था। वे भी हाथ में मिट्टी लेकर बोलने लगी-,

"देश की माटी बड़ी महान।
अपना भारत अपनी जान।।"

संस्कार सन्देश-

उत्सव तथा समूह में होने वाले प्रेरणादायी प्रयास इंन्सान को बड़ी से बड़ी कठिनाई से बाहर निकालने की क्षमता रखते हैं।

लेखिका-
सरिता तिवारी (स०अ०)
कम्पोजिट स्कूल कन्दैला, मसौधा, अयोध्या

संस्कार सदेश दिनांक - 04.03.2024

दैनिक नैतिक प्रभात - 37/2024

बाल कहानी दिन- सोमवार

मिशन शिक्षण संवाद

मिली के खिलौने

एक बार की बात है। मिली नाम की एक छोटी लड़की थी, जिसे हर समय अपने दोस्तों के साथ खिलौनों से खेलना अच्छा लगता था। पढ़ाई उसे बहुत बोझ लगती थी। जब कोई दोस्त साथ न होता, तब भी वह अकेली ही खिलौनों से खेला करती थी। यहाँ तक कि रात में भी खिलौनों से खेलते-खेलते ही सो जाती और खिलौने रात में भी उसके पास ही बिस्तर पर रहते। पढ़ाई पर ध्यान न देने से उसके स्कूल से भी शिकायत आती रहती थी। उसकी माँ यह देखकर बहुत दुःखी होती थी। समझाने का भी कोई प्रभाव नहीं पड़ता।

एक दिन मिली ने रात में सपना देखा कि उसके खिलौने आपस में बातें कर रहे हैं। "ये मिली हर समय हमारे साथ खेलती रहती है, हम तो बहुत थक जाते हैं, कभी आराम करने का समय नहीं मिलता, जबकि उसकी किताबें हमेशा आराम करती रहती हैं। मिली कभी पढ़ाई तो करती नहीं है, बहुत ही गन्दी बच्ची है। इससे अच्छा होता कि हम किसी अच्छे बच्चे के पास होते, जो हमारी भी परेशानी समझता। कभी हमें भी आराम करने को मिलता। दूसरे बच्चे तो अपने खिलौनों से हर समय नहीं खेलते।"

यह सपना देखते ही मिली की नींद टूटी और वह उठ बैठी। बिस्तर पर पड़े खिलौनों को देखकर लगा जैसे सचमुच वे सब दुःखी थे। मिली ने उन सबको बड़े प्यार से उठाया और चुपचाप अलमारी में रख दिया। बड़ी देर तक कुछ सोचती रही और फिर सो गयी। सुबह माँ के आवाज देने से पहले ही उठकर ब्रश आदि करके नहा-धोकर स्कूल के लिए तैयार हो गयी। माँ ने भी खुशी से टिफिन देते हुए उसे बहुत सारा दुलार करके स्कूल भेजा। उन बेजुबान और बेजान खिलौनों ने सपने में आकर मिली को सही राह दिखायी थी।

संस्कार संदेश-

हर समय खेलना बुरी बात है, बच्चों को खेल के साथ-साथ अपनी पढ़ाई पर भी ध्यान देना चाहिए।

लेखिका-

शिखा वर्मा (इं०प्र०अ०)
उ० प्रा० वि० स्योढ़ा
बिसवाँ, सीतापुर (उ०प्र०)

संस्कार संदेश दिनांक - 05.03.2024
दैनिक नैतिक प्रभात - 38/2024
बाल कहानी दिन- मंगलवार
मिशन शिक्षण संवाद

कबूतरों का झुण्ड

कबूतरों का झुण्ड भोजन की तलाश में इधर-उधर भटक रहा था। वहीं दूसरी तरफ एक शिकारी पक्षियों को पकड़ने की योजना बना रहा था। बहुत कोशिश करने के बाद भी कबूतरों का झुण्ड भोजन तलाश नहीं कर पा रहा था। कुछ देर बाद थक-हार कर एक पेड़ की डाल पर सभी कबूतर बैठ गये और आपस में बात करने लगे।

"न जाने आज किसकी नजर लग गयी, जिस कारण हम में से किसी को भी भोजन प्राप्त नहीं हुआ। लगता है, आज का दिन भूखे रहकर गुजारना होगा। भूख से हम लोगों का हाल इतना बेहाल है कि अब हम लोग उड़ने की कोशिश भी नहीं कर सकते। सुबह से ही हम लोग भोजन की तलाश में हैं। शाम होने को आयी है। एक तो भोजन भी नहीं मिला और कुछ शिकारी हम लोगों के पीछा भी कर रहे हैं। देखो, वह लोग इधर ही आ रहे हैं। अब हमें कौन बचाएगा! हम लोग इतना थक गये हैं कि उड़ने की हिम्मत नहीं हो रही है।"

जिस पेड़ की डाल पर बैठे सभी कबूतर एक दूसरे से बातें कर रहे थे, उसी पेड़ पर एक बन्दर रहता था। बन्दर चुपचाप सभी की बातें सुन रहा था। बन्दर बहुत दयालु था। उसे कबूतरों पर दया आयी। उसने अपने आस-पास के सभी साथियों को आवाज़ लगायी। उसके सभी साथी आ गये। साथियों की मदद से कुछ ही देर में बन्दर ने शिकारियों को भगा दिया। बन्दर के पास बहुत सारा भोजन था। उसने सभी कबूतरों को भरपेट भोजन खिलाया और थोड़ा भोजन घर ले जाने के लिए भी दे दिया। सभी कबूतर बहुत खुश हुए। उन्होंने जी भरकर बन्दर को दुआ दी और अपने घर आने का निमन्त्रण भी दिया। इस तरह से सभी कबूतरों ने बन्दर से दोस्ती कर ली।

जाते-जाते कबूतरों ने उसे धन्यवाद दिया और अपने घर की तरफ चल दिये।

संस्कार संदेश- जीवन में अगर कभी अवसर मिले, तो हमें लोगों की मदद जरूर करनी चाहिए।

लेखिका-
शमा परवीन
बहराइच (उत्तर-प्रदेश)

संस्कार संदेश दिनांक - 06-03-2024

दैनिक नैतिक प्रभात - 39/2024

बाल कहानी दिन - बुधवार

मिशन शिक्षण संवाद

वफादार कुत्ता

एक गाँव में एक गरीब ब्राह्मण अपने परिवार के साथ खुशी-खुशी रहते था। ब्राह्मण का एक छोटा बेटा भी था। अचानक गाँव में सूखा पड़ गया, क्योंकि काफी समय से बारिश नहीं हुई थी। अब घर में एक समय के भी खाने के लाले पड़ गये।

किसी तरह गुजर-बसर चल रही थी कि अचानक बेटे को पीलिया हो गया। अब बहुत मुसीबत हो गयी थी। बेटे की दवाई के भी पैसे नहीं थे। रिश्तेदारों से माँगने पर भी वह भी मदद नहीं करते हैं। किसान ब्राह्मण ने अपनी पत्नी से कहा-, "मैं शहर जाकर कुछ काम देखता हूँ।" यह कहकर किसान शहर की ओर चल दिया। रास्ते में उसे एक कुत्ता मिला, जो बहुत दुःखी था। किसान के पास आने पर वह उसके पैर चाटने लगा। किसान जो बहुत दयालु था। कुत्ते को पुचकारने लगा। तभी कुत्ता उस किसान को पकड़कर एक घर में ले गया, जहाँ उसके दो छोटे-छोटे बच्चे थे। ऐसा लग रहा था कि वह कुत्ता अपने बच्चों की रक्षा के लिए कह रहा हो। किसान ने जब इशारे से पूछा तो पता चला, मानो कुत्ता कह रहा हो कि-, "लालच की वजह से एक आदमी ने इन बच्चों की माँ को मरवा दिया हैं, क्योंकि हमारी मालकिन बहुत ही रईस थी। वह उनको मारना चाहता था, पर हम लोग उसे डराकर भगा देते थे। अब उसने इसको भी मरवाने के लिए कुछ खिला दिया है। आप मेरे बच्चों को पाल लेना।" ऐसा कहते हुए उसके पास उन बच्चों की माँ के गले में बँधी सोने की चेन और घन्टी थी। उसने मालकिन का सारा धन-दौलत उसे दे दिया।

उसके बाद किसान उन दोनों बच्चों को लेकर घर आ जाता है। देखकर उसकी पत्नी चिल्लाने लगती है-, "अभी अपने खाने व बच्चे की दवाई का ठिकाना नहीं है, ऊपर से ये और मुसीबत ले आये।"

तब ब्राह्मण किसान सारी बातें बताता है और अपने बच्चे का अच्छे से अच्छा इलाज कराकर ठीक करता है। अब दोनों कुत्ते के बच्चे और उसका बेटा दोस्त हो जाते हैं। उस किसान के दिन फिर से खुशहाली से भर जाते हैं।

संस्कार सन्देश

कभी-कभी कुछ काम जो इन्सान नहीं कर पाते,
वह ये जानवर कर देते हैं।

लेखिका

अंजनी अग्रवाल (स०अ०)
उ० प्रा० वि० सेमरुआ, सरसौल (कानपुर नगर)

संस्कार संदेश दिनांक - 07-03-2024

दैनिक नैतिक प्रभात - 40/2024

बाल कहानी दिन - बृहस्पतिवार

मिशन शिक्षण संवाद

बाल- वाटिका

एक सुदूर गाँव में एक विद्यालय था। वहाँ ग्रामवासियों का मुख्य कार्य खेती और दिहाड़ी मजदूरी का था।

माता-पिता के काम पर जाने के बाद उनके छोटे-छोटे बच्चे वहीं मोहल्ले में खेलते रहते थे।

एक दिन उन पर स्कूल के अध्यापक की नजर पड़ी।

यह देखकर उन्होंने सोचा कि बच्चों के माता-पिता से बात की करनी चाहिए।

विद्यालय में अध्यापक-अभिभावक बैठक बुलाई गयी। विद्यालय के प्रधानाध्यापक द्वारा गाँव के लोगों को समझाया गया कि-, "अब सरकार तीन साल से छ: साल तक के बच्चों को भी विद्यालय में पढ़ाने और खेल-कूद की व्यवस्था नई शिक्षा नीति के आधार पर कर रही है। जिसमें गाँव की आँगनबाड़ी को स्कूल से जोड़कर छोटे-छोटे बच्चों को खेल-खेल में शिक्षा के साथ-साथ ताज़ा भोजन भी प्रदान कर रही है।"

यह सुनकर सभी ग्रामीणों को बड़ी प्रसन्नता हुई और सभी ग्रामीणों ने मिलकर यह फ़ैसला लिया कि कल से हम बच्चों को विद्यालय जरूर भेजेंगे।

बैठक में आये सभी लोगों ने विद्यालय के प्रधानाध्यापक और सभी अध्यापकों का सहृदय धन्यवाद किया।

और इसका परिणाम यह हुआ कि अगले ही दिन से विद्यालय में छोटे-छोटे बच्चों की चहल-पहल शुरू हो गयी। उनको खेल-खेल में शिक्षा के साथ-साथ भोजन भी दिया जाने लगा, जिससे बच्चे सुरक्षित वातावरण में अपने भविष्य की तैयारी करने लगे।

संस्कार सन्देश

विद्यालय में उपस्थित सभी बच्चों को अपने छोटे-भाई बहनों को विद्यालय तक लाने हेतु प्रेरित करें।

लेखक

धर्मेन्द्र शर्मा (स०अ०)
कन्या० प्रा० वि० टोडी-फतेहपुर, गुरसराय (झाँसी)

संस्कार संदेश दिनांक - 09.03.2024

दैनिक नैतिक प्रभात - 41/2024

बाल कहानी दिन - शनिवार

मिशन शिक्षण संवाद

शिक्षा

सुरेश और सुनीता एक मध्यवर्गीय परिवार से थे। सुरेश के तीन बेटे और एक बेटी थी। सुरेश एक चतुर्थ वर्गीय सरकारी कर्मचारी था। वह अपनी नौकरी ईमानदारी से करता एवं अपने परिवार के प्रति पूरी जिम्मेदारियाँ निभाता।सुरेश अपने बेटों को खूब पढ़ना चाहता था। वह बहुत मेहनत करता और जब शाम को घर आता तो अपने बेटों को पढ़ाने के लिए बैठ जाता था। परन्तु वह अपनी बेटी की शिक्षा के प्रति लापरवाह था। सुरेश अपने बेटों को स्कूल में पढ़ने के लिए भेजता और वहीं अपनी बेटी को घर के कामों में उलझाए रखता। वह हमेशा सोचता था कि बेटे तो अपने ही घर में रहने हैं और बेटी को दूसरे के घर चला जाना है इसलिए उस की पढ़ाई पर ज्यादा धन खर्च करने की आवश्यकता नहीं है।

समय बीतता गया। चारों बच्चे बड़े हो गये। उसके तीनों बेटे खूब मेहनत करके इंजीनियर बन गये। उसने अपनी बेटी का विवाह कर दिया। परन्तु बेटी के पढ़े-लिखे न होने के कारण सुरेश की बेटी को ससुराल में कई समस्याओं का सामना करना पड़ता। वह अपनी ससुराल में परेशान रहने लगी। जब उसने यह सब बातें अपने माता-पिता को बतायीं। तब सुरेश को एहसास हुआ कि उसने बहुत बड़ी गलती की, जो अपनी बेटी को नहीं पढ़ने दिया। अब सुरेश की समझ में आने लगा था कि जितना सफल होना लड़कों के लिए जरूरी है, उतनी ही पढ़ाई लिखाई व सफलता लड़कियों के लिए भी आवश्यक है।

संस्कार सन्देश-

अगर चाहते हो बेटियों का भविष्य हो उज्जवल।
तो उनको पढ़ने दो और सँवारो उनका कल।।

लेखिका

रचना तिवारी (प्र०अ०)
प्रा० वि०- ढिमरापुरा, बबीना, झाँसी

संस्कार संदेश दिनांक - 11.03.2024

दैनिक नैतिक प्रभात - 42/2024

बाल कहानी दिन- सोमवार

मिशन शिक्षण संवाद

गुल्लक

एक छोटे से गाँव में रहने वाली एक लड़की आकांक्षा बहुत ही सरल और दयालु स्वभाव की थी। वह हमेशा दूसरों की मदद करने के लिए तैयार रहती थी। आकांक्षा जाड़े की छुट्टी में नानी के घर गयी थी। उसने देखा कि उसके मामा जी के बेटे के पास पासवर्ड वाला पेन्सिल बॉक्स था। आकांक्षा को वह बॉक्स बहुत पसन्द आया था। तब से आकांक्षा का भी बहुत मन था कि उसके पास भी ऐसा ही बॉक्स होता।

एक दिन को उसके जन्मदिन पर उसकी माँ ने एक सुन्दर सी गुल्लक उपहार में दी थी। गुल्लक काफी बड़ी थी। आकांक्षा सोचने लगी कि उसे जब भी कोई पैसे देगा, तो खर्च न करके इस गुल्लक में जमा करेगी। जब गुल्लक पैसों से भर जायेगी, तो उन पैसों से वह पासवर्ड वाला पेन्सिल बॉक्स खरीद लेगी। वह गुल्लक उसे अपने लिए बहुत लाभदायक लगी।

एक दिन पड़ोस के गाँव में आग लग गयी। आग ने गाँव को पूरी तरह से नष्ट कर दिया। लोगों की सारी सम्पत्ति नष्ट हो गयी थी। उस गाँव के लोगों को इस कष्ट में देखकर आकांक्षा ने उनकी मदद करने का निर्णय किया। वह गाँव के लोगों की सहायता करने के बारे में विचार करने लगी। वह बहुत बड़ी भी नहीं थी, न ही बहुत सारे पैसे उसके पास थे, जो पूरे गाँव की सहायता कर पाती। आकांक्षा सारी रात उन पीड़ित लोगों की सहायता करने को सोचती रही। वह सुबह उठी और अपनी प्यारी गुल्लक तोड़ दी, जिसमें से बहुत सारे पैसे निकले। पिताजी के पास जाकर बोली," पिताजी! मैं पड़ोसी गाँव के आग पीड़ित परिवार की सहायता करना चाहती हूँ।"

यह देखकर उसके पिताजी की आँखों में स्नेह और गर्व के आँसू भर आये। वे खुश होकर बोले, "बेटी! मुझे तुम पर गर्व है। तुम आगे चलकर एक बहुत नेकदिल इन्सान बनोगी।" आकांक्षा को नया पासवर्ड बॉक्स भी दिलाने का वादा किया।

संस्कार संदेश-

हमें हमारे आसपास के लोगों की यथासम्भव सहायता करनी चाहिए।

लेखिका-

शिखा वर्मा (इं०प्र०अ०)
उ० प्रा० वि० स्योढ़ा
बिसवाँ, सीतापुर (उ०प्र०)

संस्कार संदेश दिनांक - 12.03.2024

दैनिक नैतिक प्रभात - 43/2024

बाल कहानी दिन- मंगलवार

मिशन शिक्षण संवाद

मोबाइल

अनस कक्षा छ: का होनहार विद्यार्थी था। वह प्रतिदिन समय पर विद्यालय जाता और घर पर भी आकर पढ़ाई करता था। रविवार का दिन था। अनस ने अपने पिताजी से मोबाइल गेम खेलने के लिए माँगा। थोड़ी देर गेम खेलने के बाद पिता जी को मोबाइल वापस कर दिया, पर उसे मोबाइल गेम बहुत पसन्द आया। कुछ दिनों बाद अनस का जन्मदिन था। उसने मन में मन ही मन विचार कर लिया कि इस जन्मदिन पर पिताजी से उपहार में एक नया मोबाइल माँगूँगा। जन्मदिन आते ही अनस ने पिताजी से अपनी इच्छा जाहिर करते हुए कहा, "पिताजी मुझे उपहार में एक नया मोबाइल चाहिए, और कुछ नहीं चाहिए।"

पिताजी ने समझाया,"बेटा! तुम अभी बहुत छोटे हो, रही बात गेम खेलने की तो तुम मेरा मोबाइल कभी-कभी ले लिया करो।"

पर अनस ने पिताजी की एक बात नहीं मानी। वह जिद करने लगा कि "मुझे मोबाइल चाहिए तो चाहिए, वरना मैं खाना भी नहीं खाऊँगा और न ही जन्मदिन की पार्टी मनाऊँगा।" इस तरह अनस ने अपने जन्मदिन पर पिताजी से जिद करके मोबाइल फोन ले ही लिया। अनस का जन्मदिन होने के कारण उसके पिताजी मोबाइल दिलाने से मना नहीं कर पाये, लेकिन उस को समझाते हुए बोले, "अगर तुम एक दिन भी विद्यालय नहीं गये, तो मोबाइल वापस ले लेंगे।" अनस ने कहा,"ठीक है पिताजी! मैं प्रतिदिन विद्यालय जाऊँगा, जैसे पहले जाता था। घर पर आकर पढ़ाई भी करूँगा। खेल के समय ही मोबाइल का इस्तेमाल करूँगा, वह भी कुछ समय के लिए।"

कुछ दिन बीतने के बाद अनस ज्यादा समय मोबाइल को देने लगा। विद्यालय न जाने के नये-नये बहाने खोजने लगा। एक दिन ऐसा आया कि अनस ने विद्यालय जाना भी छोड़ दिया। मित्रों, शिक्षकों आदि सभी ने खूब समझाया, पर अनस को मोबाइल गेम खेलने की लत पड़ चुकी थी। अब अनस पूरी तरह से बदल चुका था। अनस की इन आदतों से सभी लोग बहुत परेशान थे। अनस अब किसी की बात भी नहीं मानता था। एक दिन अनस ने दिनभर मोबाइल में गेम खेला और रात में भी गेम खेलना शुरू कर दिया। इस तरह से प्रतिदिन अनस की यही आदत बन गयी। कुछ दिनों के बाद उसकी आँखों में जलन होने लगी। अत्यधिक जलन होने के कारण अनस के अभिभावकों ने डॉक्टर को दिखाया। जब जाँच हुई, तो अनस बहुत दुःखी हो गया। उसने अपने माता-पिता को रोते हुए देखा तो उसे शर्मिन्दगी महसूस हुई। अनस ने मन ही मन अपनी गलती पर पश्चाताप किया। अभिभावकों से भी माफी माँगी। मोबाइल वापस करते हुए पिताजी से बोला, "काश! पिताजी आपने उस दिन मेरी जिद नहीं मानी होती तो आज मेरी यह हालत न हुई होती। मैंने सब का दिल दुखाया इसलिए मुझे सजा मिली है। आप लोग मुझे माफ़ कर दीजिये।" अनस के अभिभावकों ने उसे माफ करते हुए गले से लगा लिया।

कुछ दिनों तक अनस की आँखों का इलाज चला और सब की दुआओं से अनस ठीक हो गया। ठीक होते ही अनस विद्यालय की तरफ चल पड़ा। अपने सभी अध्यापकों व मित्रों से माफी माँगी और एक नया जीवन शुरू किया।

संस्कार संदेश- हमें मोबाइल जैसी चीजों को अपनी आदत नहीं बनाना चाहिए। इनसे अपना नुकसान होता है।

लेखिका-
शमा परवीन
बहराइच (उत्तर-प्रदेश)

संस्कार संदेश

दिनांक - 13-03-2024

दैनिक नैतिक प्रभात - 44/2024

बाल कहानी

दिन - बुधवार

मिशन शिक्षण संवाद

आलसी मोहित

मोहित कक्षा 5 में पढता था। वह बहुत आलसी था। अपना गृह कार्य समय पर पूरा नहीं करता था। आज वह पेट दर्द का बहाना बनाकर स्कूल नहीं गया और गेंद लेकर बगीचे मे चला गया। बगीचे मे उसे कोई भी न दिखा। सभी लोग अपने-अपने कामों में व्यस्त थे। तब उसकी नजर एक कौवे पर पडी। कौवे के पास जाकर बोला-,"कौवे भाई.. कौवे भाई! मेरे साथ खेलो।" कौवे ने कहा-, "मुझे जन-जागरण के लिए जाना है। तुम किसी और के साथ खेलो। फिर उसे पेड की टहनी पर बैठा कबूतर दिखा। वह कबूतर से बोला-, "कबूतर भाई! आओ मेरे साथ खेलो।" कबूतर बोला-, "नहीं, भाई! सुबह का समय है, मुझे अपने बच्चों को भोजन लेने जाना है। अगर मैं तुम्हारे साथ खेलूँगा तो मेरे बच्चे भूखे रह जायेगें। तुम किसी और से खेलो ।"

आलसी बालक निराश हो गया। फिर उसने फूलों पर बैठे भौंरे को देखा- उसने भौंरे को खेलने को कहा! भौंरें ने कहा-, "मुझे पराग इकठ्ठा करना है। मेरे पास खेलने का समय नहीं है।" फिर वह चींटी के पास गया। चींटी ने भी खेलने से मना कर दिया, तब आलसी बालक सोचने लगा कि-, "इस संसार में जीव-जन्तु, कीट-पतंग सब अपने-अपने कामों में व्यस्त हैं। कोई भी आलसी नहीं है। एक मैं ही आलसी हूँ, जो अपना काम समय पर नहीं करता हूँ।" उस दिन से वह समझ गया कि आलस्य मनुष्य का सबसे बड़ा शत्रु है।

संस्कार संदेश

हमें कभी आलसी नहीं होना चाहिए, बल्कि मेहनत करनी चाहिए।

लेखिका

दमयन्ती राणा (स०अ०) रा० उ० प्रा० वि० ईड़ाबधाणी, कर्णप्रयाग (चमोली)

मिशन शिक्षण संवाद

संस्कार सदेश

दैनिक नैतिक प्रभात -

दिनांक - 14-03-2024

45/2024

बाल कहानी

दिन - बृहस्पतिवार

मित्रता

बहुत दिनों की बात है। सुन्दरवन जंगल में चीकू खरगोश और मीकू कछुआ रहते थे। दोनों में मित्रता थी। दोनों सुन्दर से जंगल में दूर दूर तक सैर करते। दोनों में से कोई भी अगर समय पर एक निश्चित स्थान पर न पहुँचता तो दूसरा उसे जगाने के लिए पहुँच जाता। कभी नदी किनारे चीकू खरगोश हाँक लगाता-, "अरे मीकू! आज पानी में ही रहोगे.. सैर पर नहीं चलोगे?" फिर मीकू अलसाया हुआ पानी से निकलता और दोनों मित्र सैर को चल पड़ते। कभी चीकू झाड़ियों में सोता रहता तो मीकू उसे आलसी, कामचोर न जाने क्या-क्या कहता? चीकू उसके बाद भी हँसते हुए उठता और अपने प्यारे दोस्त के साथ बातों में खो जाता। इसी प्रकार दोनों मित्रों के दिन सुख से बीत रहे थे।

एक दिन घूमते-घूमते दोनों की भेंट टीकू गीदड़ से हो गयी। टीकू अच्छी-भली मित्रता में आग लगने के लिए विख्यात था। ये बात चीकू मीकू भी भली-भाँति जानते थे, इसलिए दोनों बचकर निकल रहे थे। मीकू थोड़ा पीछे रह गया। बस! टीकू को मौका मिल गया-, "अरे मीकू! कहाँ उस चीकू के पीछे-पीछे घूमते हो? मेरे साथ चलो।" मीकू कछुए ने कहा-, "अरे! वह मेरा मित्र है।" भाई टीकू कहाँ पीछा छोड़ने वाला था-, "मित्र! काहे का मित्र? वह तो तुम्हें सुस्त, कामचोर और पिछलग्गू कहता है क्योंकि तुम धीमे चलते हो।" इस बार मीकू को थोड़ा सा बुरा लगा, पर उसने बड़े धैर्य से जवाब दिया-, "अरे! वह मेरा मित्र है और मैं उसका पिछलग्गू नहीं हूँ।" टीकू ने कहा-, "हाँ, बिलकुल! अरे! तुम्हारे बाप दादा ने इन खरगोशों को हराकर जंगल में एक मिसाल कायम की थी।"

इधर चीकू को लगा कि मित्र तो काफी पीछे छूट गया। वह उछलते कूदते वापस आया तो उसने टीकू गीदड़ को जाते हुए देखा। आदतन उसने मीकू से कहा-, "सुस्त कहीं के.. कहाँ रह गए थे?" वैसे मीकू को बुरा न लगता, पर टीकू के भड़काने के कारण उसको बात बुरी लग गयी। उसने कहा-, "चीकू! हमारे ही बाप दादाओं ने तुम्हारे जैसे खरगोशों को हराया था। आज तुम मुझे सुस्त कह रहे हो?" चीकू हतप्रभ रह गया। इतनी सी बात मीकू को बुरी लग गयी। फिर भी वह समझाने के स्वर में बोला-, "अरे!आज तुम कैसी बात कर रहे हो? पहले क्या हुआ.. क्या नहीं, उसे मित्रता के मध्य क्यों ला रहे हो?" मीकू की बुद्धि पलट चुकी थी। उसने कहा-, "चीकू! दुबारा प्रतियोगिता होगी मेरे और तुम्हारे मध्य। मेरे जीतने के बाद ही तुम मुझे सुस्त कहना भूल जाओगे।" चीकू के समझाने का प्रभाव मीकू पर नहीं पड़ा। बात जंगल के राजा शेर के समक्ष पहुँची। चीकू आपनी बात रख ही रहा था कि टीकू गीदड़ बीच में बोल पड़ा-, "महाराज! प्रतियोगिता करने में हानि ही क्या है? जंगल वासियों का मनोरंजन ही होगा व मीकू का खोया आत्मसम्मान भी लौट आएगा।" चीकू के न चाहते हुए भी दौड़ आरम्भ हुई। चीकू भरे गले से दौड़ने लगा। मीकू आश्वस्त था कि चीकू अभी झाड़ियों के पीछे अपने पूर्वजों की भाँति सो जायेगा और वो स्वयं दौड़ जीत जायेगा। मीकू इस उहापोह में झाड़ियों झुरमुट भी झाँकता चल रहा था और धीरे धीरे पिछड़ता जा रहा था। चीकू दौड़ समाप्ति के स्थान पर पहुँच गया, जबकि मीकू अभी आधा रास्ता भी पार नहीं कर पाया था। जंगल के राजा शेर ने चीकू की विजय की घोषणा की। चीकू फिर भी उदास रहा! उसे अपनी मित्रता टूटने का बहुत दुख था। तालियों की गड़गड़ाहट के मध्य चीकू को विजय पदक दिया गया। मीकू दु:ख से भरा हुआ यह सोच रहा था कि अब चीकू उसका उपहास उड़ाएगा, पर यह क्या चीकू? उसे मंच पर बोला रहा था। मीकू के मंच पर पहुँचते ही चीकू ने उसे अपना मेडल पहना दिया। मीकू कुछ समझता इससे पहले चीकू ने कहा-, "इस हार-जीत का महत्व हमारी मित्रता के आगे कुछ नहीं है। हम दोनों ने अपने जीवन के सारे सुख-दु:ख साथ-साथ बाँटे है तो आज मैं अकेले विजेता कैसे? ईश्वर ने हर जीव को अलग अलग गुण दिया है और वह उन्हीं गुड़ के साथ अच्छा लगता है। मेरा मित्र धरती वा जल दोनों में रह सकता है, जबकि मैं केवल धरती पर। यदि यही प्रतियोगिता जल में हुई होती तो मैं एक कदम भी न चल पाता।" मीकू तब तक संभल चुका था। उसने चीकू से क्षमा प्रार्थना की और दोनों मित्र एक-दूसरे के गले लग गये। राजा शेर ने एक और पुरस्कार की घोषणा की जो दोनों मित्रों की न टूटने वाली मित्रता को जाता था।

संस्कार संदेश

मित्रता की नींव विश्वास पर आधारित होती है।

लेखिका

सीमा द्विवेदी (स०अ०) कम्पोजिट
स्कूल कमरौली जगदीशपुर (अमेठी)

http://missionshikshansamvad.com

https://www.facebook.com/shikshansamvad

@shikshansamvad.com

9458278429

संस्कार संदेश दिनांक 15-03-2024
दैनिक नैतिक प्रभात - 46/2024
बाल कहानी दिन - शुक्रवार
मिशन शिक्षण संवाद

कन्या रत्न

आज घर में बहुत ही खुशियों भरा दिन था। शोर उठने बाद चारों ओर बधाई गीत सुनाई दे रहे थे। घर के आँगन में पडोस की औरतें बच्ची के जन्म पर गारी और गीत ढोलक की छाप पर नृत्य करते हुए गा रही थीं। सभी घर के लोग बहुत व्यस्त और प्रसन्न थे। नाई, लोहार, बढ़ई, ढीमर तथा वंशफार मनमाना इनाम ओर कपड़े पाकर बहुत खुश होकर बच्ची और उसके माता-पिता, दादा-दादी और अन्य परिजनों को ढ़ेर सारी शुभकामनाएँ और आशीर्वाद दे रहे थे। गाने के लिए पडोस में रोज बुलौवा लगवाया जाता है ताकि सभी लोग आयें और नृत्य-गान करें। सभी को शाम को जाते समय मिठाई और बताशे दिए जाते थे।

एक दिवस किन्नरों को जब पता चला कि तिवारी परिवार में बहुत मिन्नतों और याचना के बाद कन्या जन्म हुआ है तो वे बच्ची को आशीर्वाद देने और नैग लेने आ पहुँचे तथा बधाई गीत गाकर ढ़ोलक बजाकर नाचने लगे। जाते समय दादा-दादी ने उन्हें मुँह-माँगी दक्षिणा और वस्त्र प्रदान किए। उन्होंने बच्ची को उसके माता-पिता सहित बुलवाकर अनेकों आशीर्वाद देते हुए कहा कि-, "इस बच्ची के आगमन पर आपका घर धन्य हुआ या बच्ची यहाँ जन्म पाकर धन्य हुई, ये तो हम लोग नहीं जानते, लेकिन ये जरुर जानते हैं कि ऐसे घर में कभी भी, कोई भी किसी तरह की परेशानी कभी नहीं आ सकती।" ऐसा कहकर वे पुत्र-प्राप्ति का आशीर्वाद देकर और चावल-हल्दी लेकर चले गये। 'ऐसा घर खुशियों से भरा रहे, इस घर में सभी की उन्नति हो और सबकी सभी मनोकामनाएँ पूर्ण हों' ऐसा कहते हुए वे आपस में हर्षित हो जा रहे थे। घर के दादा-दादी और सभी सदस्य कह रहे थे कि-, "जीवन में सब कोई सभी कुछ खरीद सकता हैं, लेकिन आशीर्वाद कोई नहीं खरीद सकता है।" पडोस की औरतें पुनः अपना गाना-बजाना शुरू करके नृत्य करने लगीं। धीरे-धीरे बच्ची बड़ी हुई और सभी उसे भूमि के नाम से बुलाते लगे, क्योंकि पण्डितजी ने उसका यही नामकरण किया था। जन्म प्रमाण-पत्र आँगनबाड़ी में भी उसका यही नाम दर्ज करवाया गया। भूमि अपनी मधुर मुस्कान और अनुरागमय किलोलों से सभी का मन नित्य हर्षित कर रही थी। वह सात-आठ महीने की होने पर हाथ-पैरों के द्वारा सरककर सभी जगह जाने लगी और इधर-उधर रखी चीजों को उठाने और फटकने लगी। सभी उसके इन कृत्यों पर बहुत खुश होते। घर के सदस्यों में उसे खिलाने और घुमाने ले जाने के लिए होड़ लगी रहती। एक साल होने पर वह आँगन में ठुमक-ठुमक कर चलने लगी। अब सभी ने चीजों को उसकी पहुँच से दूर रखना शुरू कर दिया। फिर भी अगर कहीं अनाज या दालें धूप में सूखने के लिए पड़ीं देखती तो उसे फैलाने लगती। अब दादी ने अनाज और दालों को छत पर सुखाना प्रारम्भ कर दिया। घर में उसके चारों ओर खिलौने ही खिलौने दिखाई देते थे। उसकी हर माँग खाने-पीने और ओढ़ने-पहनने की तत्क्षण पूरी की जाती। उसके बीमार होने या सर्दी-जुकाम होने पर सभी लोग चिन्तित हो जाते। समय धीरे-धीरे गुजरता गया। पता नहीं, तीन साल कैसे गुजर गये? भूमि की माँ पति के साथ जाने की बार-बार जिद करने लगी, लेकिन अब अधिक टालना संभव नहीं था। भूमि माँ और पापा के साथ चली गयी। भूमि के जाने के बाद घर में सभी फुरसत से हो गये थे जैसे किसी को कोई काम न रह गया है। सभी उदास और बैचेन रहने लगे। बीते दिनों की यादें और भूमि की बचपन की लीलाएँ किसी को भूले नहीं भूल रही थीं। सभी घर के लोग और पडोसी तथा स्कूल के बच्चे नित्य उसकी चर्चा करते थे और उसकी कमी महसूस करते-थे।

संस्कार सन्देश-

बेटी सचमुच खुशियों का खजाना लेकर आती है। उसकी अनुपस्थिति घर को खालीपन से भर देती है।

लेखक-
जुगल किशोर त्रिपाठी
प्रा० वि० बम्हौरी, मऊरानीपुर, झाँसी

संस्कार संदेश दिनांक - 16.03.2024

दैनिक नैतिक प्रभात – 47/2024

बाल कहानी दिन - शनिवार

मिशन शिक्षण संवाद

वार्षिक प्रतियोगिता

सुदूर गाँव में एक विद्यालय था। उस विद्यालय में अमित, सुनील और रोहिणी तीन बच्चे पढ़ते थे, जो आपस में बहुत अच्छे दोस्त थे। तीनों ही बच्चे नियमित विद्यालय आते थे और मन लगाकर सीखते थे। तीनों में से कोई दोस्त किसी कारण विद्यालय नहीं जा पाता था तो वह दोनों से पूछ लेता था, आज विद्यालय में क्या पढ़ाया गया? उसे वह घर से सीख लेता था, जिससे वह पढ़ाई में पिछड़ता नहीं था।

एक बार उनके विद्यालय के कक्षा अध्यापक ने बच्चों को सूचना दी कि अगले माह पूर्व वर्षों की तरह इस वर्ष भी आप सभी की ब्लॉक स्तरीय बहुविकल्पीय परीक्षा आयोजित होनी है। यह सुनकर बच्चे बहुत खुश हुए और विद्यालय के सभी बच्चे अपनी अपनी तैयारी में जुट गये। सभी ने परीक्षा की अच्छी तैयारी की और इसमें विद्यालय के अध्यापकों ने भी सहयोगी की महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और सभी छात्रों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। परीक्षा के दिन सभी अपनी अपनी परीक्षा देकर अपने परिणाम की प्रतीक्षा कर रहे थे। सभी बच्चों को सभागार में बिठा दिया। टॉप तीन बच्चों के नाम बोले गये, उनमें रोहिणी का प्रथम स्थान और अमित का दूसरा स्थान एवं सुनील का तीसरा स्थान आया। तीसरा स्थान आने से सुनील दु:खी हुआ, तभी सभागार में उपस्थित सभी बच्चों को समझाया गया कि अगले वर्ष की परीक्षा की तैयारी करें और अधिक मेहनत करें। इसके बाद सभी बच्चों को प्रमाण-पत्र वितरित कर विदा किया गया।

संस्कार सन्देश-

परिणाम से कभी दु:खी नहीं होना चाहिए। कोई भी परिणाम अंतिम नहीं होता। कड़ी मेहनत करें!

लेखक-

धर्मेन्द्र शर्मा (स०अ०)

क० प्रा० वि० टोडी-फतेहपुर, झाँसी

संस्कार संदेश दिनांक - 18-03-2024
दैनिक नैतिक प्रभात -47/2024
बाल कहानी दिन - सोमवार
मिशन शिक्षण संवाद

समझौता नहीं

रेहाना के अब्बू-अम्मी अपने खेत-खलिहान, घर-द्वार और अपनों को छोड़कर काम की तलाश में असलम शेख के भट्ठे पर रोजी-रोटी की जुगाड़ में आ गये।

रेहाना अपने गाँव में छठी जमात तक पढ़ी थी। यहाँ अम्मी-अब्बू दिन-भर काम में लगे रहते, इसी वजह से रेहाना अभी स्कूल न जा पा रही थी। वह अम्मी-अब्बू का काम में हाथ बँटाती और समय निकालकर खुद ही पढ़ती रहती।

एक दिन अब्बू ईंटें बना रहे थे। रेहाना अंग्रेजी की किताब पढ़कर अब्बू को सुना रही थी, तभी भट्ठा मालिक असलम शेख अपनी चमचमाती कार से उतरकर भट्ठे पर काम कर रहे मजदूरों के पास आये। उनकी निगाह रेहाना की किताब पर पड़ी। उन्होंने उत्सुकतावश रेहाना से पढ़ने को कहा। रेहाना ने फटाफट पढ़कर सुना दी।

असलम शेख ने पूछा-, "रेहाना! आप बड़ी होकर क्या बनना चाहती हो?"

रेहाना-, "मैं बड़ी होकर आपकी तरह ईंट का भट्ठा अपने गाँव में बनवाऊँगी, जिससे मेरे अब्बू को गाँव न छोड़ना पड़े।"

रेहाना के अब्बू ने माफी माँगते हुए कहा-, "मालिक! ये अभी नादान है। ये उन सपनों को देख रही है, जो हमारे वश में नहीं है।"

असलम शेख बोले-, "रिजवान! रेहाना के सपने उसके अपने सपने हैं। सपनों को पूरा करने का जज्बा उसके मन में पैदा करो। सपने अमीरी-गरीबी के आधार पर नहीं देखे जाते। सपने जज्बे के साथ देखे जाते हैं।"

"मैं अपने सपनों से समझौता कभी नहीं करूँगी। अपना सपना साकार करने के लिए कड़ी से कड़ी मेहनत करूँगी।" रेहाना के चेहरे पर नूर चमक रहा था।

'इंशाअल्लाह' असलम शेख ने दुआ माँगते हुए कहा।

संस्कार सन्देश

सपने देखना जितना आवश्यक है, उतना ही उन्हें साकार करने के लिये कड़ी मेहनत भी जरूरी है।

लेखिका

प्रवीणा दीक्षित (अध्यापिका)
क० गाँ० आ० बा० वि० कासगंज

संस्कार सदेश दिनांक -19.03.2024
दैनिक नैतिक प्रभात - 48/2024
बाल कहानी दिन - मंगलवार
मिशन शिक्षण संवाद

खिलौने

एक किसान के दो पुत्र थे, राज और करन। एक दिन किसान अपनी पत्नी के साथ दूसरे गाँव में किसी काम से गया। जाते समय किसान ने अपने दोनों बच्चों पर घर की देखभाल की जिम्मेदारी छोड़ दी, ये कह कर कि आज रविवार है। तुम दोनों को स्कूल तो जाना नहीं है। आज घर पर ही रहना। हम शाम को वापस आ जाएँगे। किसान के जाने के बाद दोनों भाई आपस में लड़ने लगे। राज ने कहा,"तुम घर पर रुको! मैं बाहर खेल कर आता हूँ।"

करन ने जवाब देते हुए कहा,"मैं तुमसे बड़ा हूँ, मैं बाहर जा रहा हूँ खेलने। तुम घर पर रहकर घर की देखभाल करो।"

इतना कहकर करन घर से बाहर चला गया। राज दु:खी हो गया। उसने करन का बहुत इन्तजार किया पर शाम हो गयी और करन नहीं आया। राज रोने लगा इतने में राज के माता-पिता घर वापस आ गये। राज को रोता देख गले से लगा लिया। राज को मिठाई और बहुत से खिलौने दिये। खेल कर करन जब घर वापस आया तो उसे बहुत डाँट पड़ी। करन को अपनी गलती का एहसास हुआ। उसने अपने माता-पिता और छोटे भाई से क्षमा माँगते हुए बोला,"मुझे क्षमा कर दीजिए। अब आगे से मैं कभी ऐसी गलती करूँगा।"

करन के पश्चाताप को देख कर किसान ने अपने दोनों बच्चों को गले से लगा कर प्यार किया।

संस्कार सन्देश

हमें अपने माता-पिता की आज्ञा का सदैव पालन करना चाहिए।

लेखिका-
शमा परवीन
बहराइच (उत्तर प्रदेश)

संस्कार सदेश दिनांक -20.03.2024

दैनिक नैतिक प्रभात -49/2024

बाल कहानी दिन - बुधवार

मिशन शिक्षण संवाद

पौष्टिक तत्व

नैतिक कक्षा सात में पढ़ता था। वह बहुत होनहार बच्चा था। पढ़ाई में तो वह हमेशा आगे रहता था, लेकिन खेलों में वह हमेशा पीछे रह जाता था। एक कमजोरी थी उसकी, कि उसे हरी सब्जियाँ खाना बिल्कुल पसन्द नहीं था। बस! कुछ ही फलों को छोड़कर फल खाने में भी वह अक्सर आना-कानी करता था। उसकी माँ हमेशा समझाती थी कि-, "बेटा! हमारे शरीर के सही विकास के लिए फल-सब्जियाँ और दूध सभी कुछ आवश्यक है। मात्र कुछ एक चीजों के खाने से हमारे शरीर में सभी पोषक तत्वों की पर्याप्त पूर्ति नहीं हो सकती है।" माँ के इतना समझाने पर भी उसे सब्जियों और फलों से न जाने क्यों चिढ़ सी रहती थी।

एक दिन नैतिक अपने पिताजी के साथ खेत पर गया। वहाँ अलग-अलग फसलों की क्यारियाँ बनी हुई थीं। कुछ क्यारियों के पौधे बहुत हरे-भरे और स्वस्थ दिखाई दे रहे थे, लेकिन कुछ क्यारियाँ सूखी और बेजान दिखायी दे रही थीं। पिताजी ने सभी क्यारियों में निराई-गुड़ाई की और सभी में खाद डाली। नैतिक बड़े ध्यान से ये सब देखता रहा और फिर पिताजी से पूछा-, " पिताजी! अपने खेत की कुछ क्यारियाँ तो खूब हरी हैं, लेकिन कुछ क्यारियों के पौधे बेजान से क्यों दिखायी दे रहे हैं?"

नैतिक के पिताजी बोले-, "बेटा! इस समय मैं कुछ क्यारियों पर कम ध्यान दे पाया हूँ, इसलिए ऐसा है। जिस तरह पौधों की वृद्धि के लिए अलग-अलग तरह की खाद की जरूरत होती है, उसी तरह हमारे शरीर के लिए सभी पोषक तत्व जरूरी होते हैं। इस तरह हम सभी कामों को करने के लिए ऊर्जा की प्राप्ति फल-सब्जियों और अन्य चीजों से प्राप्त करते हैं। यदि पौधों को उनकी आवश्यकता के अनुसार खाद और पानी न मिले, तो वे कमजोर हो जायेंगे। इसी तरह हमारे शरीर को भी पर्याप्त मात्रा में पोषक तत्व न मिलने से हमारा शरीर भी कमजोर हो जायेगा।"

नैतिक को बात समझ में आ चुकी थी कि माँ ठीक कहती थी। पढ़ाई के साथ-साथ खेल-कूद में भी आगे रहने के लिए शरीर का मजबूत होना बहुत आवश्यक है। आगे से उसने सोच लिया था कि थाली में दी हुई माँ की सब्जियों को वह पूरा खा लिया करेगा, क्योंकि जब उसका शरीर स्वस्थ होगा, तभी वह अपनी पढ़ाई अच्छे से कर पायेगा और खेलों में भी हमेशा आगे रहेगा। विद्यालय में भी उसके शिक्षकों ने उसे बताया बताया है कि स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क का निवास होता है।

संस्कार सन्देश

हमें शरीर को स्वस्थ रखने के लिए हरी सब्जियों और फलों को भोजन में अवश्य सम्मिलित करना चाहिए।

लेखिका-
शिखा वर्मा (इं०प्र०अ०)
उ० प्रा० वि० स्योढ़ा, बिसवाँ, सीतापुर

संस्कार संदेश

दैनिक नैतिक प्रभात - 50/2024

दिनांक - 21-03-2024

बाल कहानी

दिन - बृहस्पतिवार

मिशन शिक्षण संवाद

गहरी मित्रता

कोयल और गौरैया में बहुत अच्छी दोस्ती थी। जहाँ भी जाते, दोनों एक साथ जाते थे और हर काम में एक-दूसरे की मदद करते थे। एक दिन गौरैया को कोयल दिखाई नहीं दी। गौरैया दौड़कर कोयल के घर गयी। गौरैया ने कहा-, "क्या बात है, आज तुम दिखाई नहीं दी?" कोयल बोली-, "मैं कल किसी काम से कहीं जा रही थी, तभी रास्ते में मेरा पैर फिसल गया और पैर में चोट लग गयी।" गौरैया बोली-, "चलो, मैं तुम्हें डाक्टर के पास ले जाती हूँ नहीं-नहीं.. यहीं पर रामू के दादा दवाई देते हैं। उन्होंने मेरे पैर पर लैप लगाया है और आराम करने को कहा है।" कोयल ने बताया। गौरैया ने कोयल से कहा-, "तुम आराम करना। तुम्हारे सारे काम मैं कर दूँगी।"

अगले दिन से गौरैया रोज कोयल के घर आती थी। उसके लिए खाना भी लाती थी। गौरैया ने कोयल के घर की साफ-सफाई की। उसकी बहुत सेवा की। गौरिया कोयल का बहुत ध्यान रख रही थी। कोयल बहुत खुश हुई और बोली-, "मैं कितनी भाग्य शाली हूँ, जो मुझे तुम जैसी दोस्त मिली।" कोयल बोली-, "मै तुम्हारा यह एहसान कभी नहीं भूलूँगी। तुम मेरा इतना ख्याल रख रही हो।" गौरिया ने कहा-, "मैं तुम्हारी दोस्त हूँ। मैं तुम्हारी मदद नहीं करूँगी तो और कौन करेगा?" ऐसा सुनकर कोयल खुश हो गयी। उन दोनों की दोस्ती और भी गहरी हो गयी।

"कह रहीम संपत्ति सगै, बनत बहुत बहु रीत।
बिपत्ति कसौटी जे कसै, तेई साँचे मीत"।।

संस्कार सन्देश

जो मुसीबत में काम आये वही सच्चा मित्र कहलाता है।

लेखिका

दमयन्ती_राणा (स०अ०) रा० उ० प्रा० लिए ईड़ाबधाणी कर्णप्रयाग चमोली (उत्तराखण्ड)

संस्कार सदेश
दिनांक - 22.03.2024
दैनिक नैतिक प्रभात -51/2024
बाल कहानी
दिन - शुक्रवार
मिशन शिक्षण संवाद

जंगल की सैर

एक दिन रामू और श्यामू रविवार को जंगल में घूमने गये। जंगल बहुत ही घना था। वहाँ तरह-तरह के पक्षियों का कलरव जंगल में कोलाहल पैदा कर रहा था। रामू बोला- "यार श्यामू! मैं तो समझता था कि हम लोग ही शोर मचाते हैं। ये पक्षी तो हमसे भी अधिक कोलाहल मचा रहे हैं।" "लेकिन इनका कलरव कितना सुखद लगता है। इनसे ही तो जंगल में चहल-पहल रहती है।" श्यामू ने कहा।

रामू ने कहा- "वह सब तो ठीक है, लेकिन इनका कोलाहल तो बन्द ही नहीं होता है?" श्यामू ने जबाब दिया- "जंगल में अगर पक्षियों का कोलाहल न हो, तो जंगल ही कैसा।" "हाँ! ये तो सही है। अच्छा, चलो! आगे चलते हैं।" रामू इतना कहकर श्यामू के साथ आगे बढ़ गया। दोनों मित्र जंगल में चारों ओर देखते हुए आगे बढ़ रहे थे, तभी एकाएक किसी के घुरघुराने की आवाज आयी। दोनों भयभीत हो एक-दूसरे को देखने लगे। जैसे ही उन दोनों ने बड़े गौर से बगल में देखा तो वे दंग रह गये। एक सर्प नेवले के मुँह को फन से दबाए हुए था। नेवला छटपटाते हुए घुरघुरा रहा था। उसने सर्प की पकड़ से छूटने की बहुत कोशिश की, लेकिन सर्प की पकड़ से वह मुक्त न हो सका। रामू और श्यामू ने एक-दूसरे को देखा और आपस में इशारा किया। वे दोनों छिपते हुए आगे बढ़ गये। पास ही में एक बड़े वृक्ष की ओट में खड़े होकर रामू ने एक लंबा डंडा तोड़ा और मौका देखकर सर्प पर हल्के से प्रहार किया। डंड़े की चोट से सर्प तिलमिला गया और उसकी पकड़ ढ़ीली हो गयी। नेवला तुरन्त सर्प की पकड़ से छूटकर भाग गया। सर्प ने इधर-उधर देखा और नेवले को न पाकर वह भी वहाँ से धीरे-धीरे रेंगकर एक वृक्ष के नीचे बने बिल में घुस गया। श्यामू ने कहा- "चलो! अब घर चलते हैं, अन्यथा अगर सर्प की हम दोनों पर नजर पड़ गयी तो फिर हम दोनों मुश्किल में पड़ जायेंगे।" "हाँ, चलो! अब रुकना ठीक नहीं है।" दोनों मित्र जल्दी से वहाँ से घर की ओर चल पड़े। घर आकर उन्होंने अपने माता-पिता को सारी बातें बतायीं। उनके माता-पिता ने उन्हें भविष्य में जंगल में इस तरह अकेले घूमने से मना किया और उन्हें जंगल के खतरों से आगाह किया। रामू और श्यामू ने प्रण किया कि वह भविष्य में कभी भी अकेले जंगल में नहीं जायेंगे। लेकिन उन्हें इस बात की खुशी और सन्तुष्टि थी कि उन्होंने एक जीव की जान बचायी। जो किसी की रक्षा करता है, उसकी रक्षा स्वयं भगवान करते हैं।

संस्कार सन्देश-

छोटे बच्चों को, बिना बड़ों को साथ लिए जंगल में नहीं जाना चाहिए।

लेखक-
जुगल किशोर त्रिपाठी
प्रा० वि० बम्हौरी, मऊरानीपुर, झाँसी

http://missionshikshansamvad.com
https://www.facebook.com/shikshansamvad
@shikshansamvad.com
9458278429

संस्कार सदेश दिनांक - 23.03.2024
दैनिक नैतिक प्रभात - 52/2024
बाल कहानी दिन - शनिवार
मिशन शिक्षण संवाद

फर्ज और कर्तव्य निष्ठा

एक गाँव में सोनू और मोनू नाम के दो भाई रहते थे। दोनों ही किसान थे। दोनों भाइयों का प्यार देखकर सभी उनकी तारीफ करते थे। उनके माता-पिता बुजुर्ग थे। घर आकर दोनों उनकी सेवा करते और अपनी छोटी बहन को, जो दसवीं कक्षा में पढ़ती थी, उसको पढ़ाने के लिए अपने पास बिठा लेते। रात का खाना सभी एक साथ खाते और सो जाते।
एक दिन अधिक बारिश हो रही थी। छप्पर पुराना था। उसमें से पानी आया तो सब सामान भीग गया। उन्हें बड़ी परेशानी उठानी पड़ी। दूसरे दिन जब बारिश बन्द हुई तो बहिन ने नया छप्पर बनाने की बात कही और आनन्द ने छप्पर का सारा सामान इकट्ठाकर छप्पर को बना दिया। सभी उसमें रहने लगे, लेकिन बारिश में भीगने के कारण छोटी बहन की तबीयत खराब हो गयी। जब डॉक्टर को दिखाया तो डॉक्टर ने बहुत महँगी दवाई लिख दी। अब दवाई के लिए पैसे नहीं थे। सोनू ने कहा- "भाई! मेरी यह पुरानी साइकिल है। इसको बेचकर दवाई ले आओ। किसी भी तरीका से हमें अपनी बहन को ठीक करना है।" मोनू ने तब 'हाँ' कर दी और दवाई लेकर आ गया। अगले दिन बोर्ड परीक्षा शुरू हो गयी। बहन का परीक्षा सेंटर काफी दूर पड़ा था। अब सोनू सोच में पड़ गया कि इतनी दूर पैदल कैसे जायें? साइकिल तो है नहीं, पुरानी बोगी घर में खड़ी हुई थी। उसे चलाने के लिए बैल या भैंसा नहीं था। दोनों भाइयों ने जल्दी से अपनी बहन को तैयार किया और गाड़ी को बाहर निकाला। बहन को बिठाकर खुद दोनों बोगी खींचते हुए केंद्र पर ले गये ताकि पेपर न छूट जाये। यह देखकर कुछ लोग तारीफ भी कर रहे थे और कुछ हँस भी रहे थे, लेकिन वे दोनों बहन के प्रति अपना प्यार, अपना फर्ज और कर्तव्य निभा रहे थे। शाम को जब घर वापस आये तो घर पर मुखियाजी बैठे हुए थे। उन्होंने जब यह नजारा देखा तो उनकी आँखें भर आयीं। उन्होंने दोनों भाइयों को शाबाशी दी कि- "आज आपने दिखा दिया कि फर्ज और कर्तव्य क्या होता है!" उन्होंने दोनों भाइयों को धन-राशि देकर सम्मानित किया और कहा कि- "कुछ भी जरूरत हो, तो बेझिझक मुझसे माँग लीजिए। जब तक पेपर चल रहे हैं। मेरी बाइक ले जाओ।" मुखिया जी का इतना कहना भगवान की तरह वरदान साबित हुआ। आस-पड़ोस के व्यक्ति भी जो हँस रहे थे, वह भी मदद करने के लिए तैयार हो गये। माता-पिता अपने बेटों के इस निश्चल विशुद्ध प्रेम को देखकर बहुत खुश हुए। उन्होंने अपने तीनों बच्चों को गले लगा लिया।

संस्कार सन्देश-

हमें अपने परिवार में मिल-जुलकर रहते हुए छोटों के प्रति अपने फर्ज और कर्तव्य को निभाना चाहिए।

लेखिका
पुष्पा शर्मा (शि०मि०)
पी० एस० राज़ीपुर, अकराबाद, अलीगढ़

संस्कार संदेश दिनांक -26.03.2024
दैनिक नैतिक प्रभात - 53/2024
बाल कहानी दिन - मंगलवार
मिशन शिक्षण संवाद

मुरझायी फसलें

एक गाँव में दो किसान मैकू और श्यामू रहते थे। वे दोनों ही बहुत बहुत मेहनती थे। अपनी मेहनत के बल पर दोनों के खेतों में गाँव में सबसे अधिक फसल होती थी, लेकिन कुछ समय से गाँव के ही कुछ लोगों की बुरी संगत के कारण मैकू अपने खेतों में ध्यान कम दे रहा था। वह बीज और खाद-पानी समय पर नहीं देता था। उसकी लापरवाही उसकी फसलों को प्रभावित करने लगी थी।

उसके खेत सूखे हुए थे और फसलों का उत्पादन लगातार कम होता जाता था। मैकू अपने नये साथियों के साथ अक्सर गाँव में ताश खेलता रहता था। मैकू की पत्नी मैकू की इस आदत से परेशान रहती थी। वह समझाती तो मैकू उससे झूठ बोल दिया करता कि खेतों से अभी आया हूँ।

एक दिन मैकू से श्यामू ने कहा, "मैकू भाई! आपको अपने काम पर ध्यान देना चाहिए। खेती में लापरवाही नहीं करनी चाहिए, क्योंकि हमारी जीविका का एकमात्र साधन यही है। समय पर हर काम नहीं करोगे तो खेत सूने हो जायेंगे।" मैकू ने उसे अपने खेत दिखाये और फिर उसे खेतों की ओर ले गया। अपने मुरझाये खेतों को देखकर वह बहुत शर्मिन्दा हुआ। तब उसे यह अहसास हुआ कि वास्तव में उसने लापरवाही की है। और अपनी ग़लती सुधारने के लिए मन में तय कर लिया। धीरे-धीरे मैकू की खेती की रंगत बदल गयी। मेहनत और ध्यान देने से उसकी फसल भी अच्छी होने लगी। मुरझायी फसलें फिर से खुशी से झूमने लगीं। मैकू को अच्छी पैदावार प्राप्त हुई, जिससे उसकी आर्थिक स्थिति में सुधार हुआ।

संस्कार सन्देश

यदि हमारे मित्र या सम्बन्धी अपना रास्ता भटक जाएँ, तो सही सलाह देकर उनको राह दिखानी चाहिए।

लेखिका-
शिखा वर्मा (इं०प्र०अ०)
उ० प्रा० वि० स्योढ़ा, बिसवाँ (सीतापुर)

संस्कार संदेश दिनांक -27.03.2024
दैनिक नैतिक प्रभात - 54/2024
बाल कहानी दिन - बुधवार
मिशन शिक्षण संवाद

चिन्टू का गाँव

गाँव में बहुत भीड़ जमा हुई थी। मैं अचानक शहर से गाँव बहुत दिनों बाद आया था। गर्मी की छुट्टियाँ थीं। नानी के घर घूमने गया था। आज अपने माता-पिता के साथ गाँव आया तो देखा कि गाँव में बहुत भीड़ जमा हुई है। मैंने भीड़ को हटाते हुए जाकर देखा तो पता चला कि एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति से लड़ाई कर रहा था। लोग वीडियो बना रहे थे। कोई उन दोनों को एक दूसरे से हटा नहीं रहा था, जबकि भीड़ इतनी ज्यादा थी कि अगर दोनों व्यक्तियों को अलग-अलग करके भीड़ हटा देती तो शायद लड़ाई रुक जाती।

इससे पहले मैं कुछ कहता या करता, पिताजी बोले-, "चिन्टू चलो! घर चलो। यह तो रोज का माजरा है। ये लोग सुधरने वाले नहीं है। आये दिन लड़ाई-झगड़ा करते रहते हैं। तुम घर चलो! कल तुम्हें स्कूल भी जाना है।" मैंने पिताजी से कहा-, "पिताजी! आप इन दोनों को लड़ाई करने से रोकें"। पिताजी ने मुझे डाँटते हुए कहा-, "तू घर चलता है कि लगाऊँ तुझे एक थप्पड़!" चिन्टू ने पिताजी से निवेदन किया कि-, "एक बार कोशिश करके देखिए, शायद लड़ाई रुक जाये। आप ही तो कहते हैं कि अगर हमें भलाई करने का मौका मिले तो जरूर करना चाहिए। इन दोनों लोगों को लड़ाई से रोकना भी एक भलाई है।"

चिन्टू की बात सुनकर उसके पिताजी ने लड़ाई रोकने की। पहल की और लोगों से भी लड़ाई रुकवाने के लिए मदद माँगी। कुछ ही देर में भीड़ ने मिलकर लड़ाई कर रहे दोनों व्यक्तियों को अलग-अलग ले जाकर समझा दिया। कुछ ही देर में दोनों व्यक्तियों का एक-दूसरे से समझौता हो गया। चिन्टू को बहुत अच्छा लगा। उसने अपने पिताजी को धन्यवाद कहा और घर की ओर चल दिया।

संस्कार सन्देश

आपस में झगड़ रहे लोगों में समझौता करा देना भलाई का काम है।

लेखिका-
शमा परवीन (अनुदेशक)
उ० प्रा० वि० टिकोरा मोड़, तजवापुर, बहराइच

संस्कार संदेश दिनांक - 28-03-2024

दैनिक नैतिक प्रभात - 55/2024

बाल कहानी दिन - बृहस्पतिवार

मिशन शिक्षण संवाद

रुचि

शोभित कक्षा पाँच में पढ़ता था। वह पढ़ने में बहुत ही होशियार था, किन्तु उसे कविता और कहानियों में रुचि नहीं थी। उसकी रुचि विज्ञान और गणित में थी। वाकी अन्य विषयों का भी उसे अच्छा ज्ञान था। प्रार्थना स्थल पर जब उससे कहानी या कविता वाचन के लिए कहा जाता तो वह मौन हो जाता। सभी अध्यापक और बच्चे उसकी हँसी उड़ाते। अपनी हँसी होते हुए देखकर उसे बहुत बुरा लगता और मन ही मन खीज भी होती, किन्तु वह किसी से कुछ नहीं कहता।

दिन बीतते गये।

कुछ दिनों बाद यह बात जब उसके माता-पिता को पता चली तो उन्होंने शाम को शोभित से इस बारे में पूछा! शोभित ने कहा कि-, "मैं क्या करूँ पापा? मुझे कविता-कहानी पढ़ने में कोई रुचि नहीं होती है।" शोभित के पापा ने कहा कि-, "क्या इस तरह रोज अपनी हँसी उड़ाते हुए बच्चों को देखकर तुम्हें अच्छा लगता है?"

"नहीं पापा!" शोभित ने कहा।

उसके पापा ने कहा कि-, "भले ही तुम्हें कविता-कहानियों में रुचि न हो, लेकिन स्कूल में जो गतिविधियाँ होती हैं, उनमें भी तुम्हारा दायित्व बनता है कि तुम भाग लो और सदा आगे रहो।"

पापा की बात सुनकर शोभित बोला-, "लेकिन मुझे तो कविता और कहानियाँ आती ही नहीं हैं, मैं उन्हें कैसे सुनाऊँगा?" शोभित की जिज्ञासा देखकर उसके पापा ने कहा कि-, "तुम उसकी चिन्ता मत करो! मैं तुम्हें रोज शाम को एक कविता और कहानी सुनाऊँगा और उसकी गतिविधि भी सिखाऊँगा। दूसरे दिन तुम स्कूल में प्रार्थना स्थल पर उसे सुनाना। इससे तुम्हें धीरे-धीरे इनमें रुचि भी बढ़ेगी और अध्यापकों और बच्चों के सामने हँसी का पात्र नहीं बनना पड़ेगा।" पापा की बात रोहित को अच्छी लगी।

शोभित अब रोज शाम को अपने पापा से कहानी और कविता सुनता, याद करता और फिर दूसरे दिन स्कूल में उन्हें सुनाता। शोभित के मुँह से इतनी सुन्दर, प्रेरणादायक, उपयोगी कहानियाँ और कविताएँ सुनकर सभी अध्यापक और बच्चे दंग रह गये। उन्होंने जब शोभित से उसके व्यवहार में अचानक आये इस परिवर्तन के बारे में पूछा तो उसने बताया कि-, "मेरे पापा शाम को मुझे रोज एक कहानी और कविता सुनाते हैं और उसकी गतिविधि भी रोज कराते हैं। वही मैं रोज यहाँ सुनाता हूँ।" सभी ने शोभित के पापा की और शोभित की सराहना की। धीरे-धीरे शोभित को कविता और कहानियों में इतनी रुचि बढ़ने लगी कि आगे चलकर वह स्वयं कविता और कहानियाँ लिखने लगा। अब उसकी कविताएँ और कहानियाँ विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं और समाचार-पत्रों में छपने लगी। बड़े होने पर वह देश में आयोजित विभिन्न कवि सम्मेलनों और विचार-गोष्ठियों में भाग लेने लगा, लेकिन उसने विज्ञान और गणित के प्रति अपनी रुचि कमजोर नहीं होने दी। उसने आगे बढ़ने के लिए अपना प्रयास सतत् जारी रखा।

संस्कार संदेश

कविता और कहानियाँ हमारे जीवन के अंग हैं। ये हमें सदैव अच्छा कार्य करने और आगे बढ़ने की प्रेरणा देते हैं।

लेखक

जुगल किशोर त्रिपाठी प्रा० वि०- बम्हौरी, मऊरानीपुर, झाँसी (उ०प्र०)

संस्कार सदेश दिनांक -30.03.2024
दैनिक नैतिक प्रभात - 56/2024
बाल कहानी दिन - शनिवार
मिशन शिक्षण संवाद

पेन्सिल

करन- "राजेश! तुम्हारे पास मेरी पेन्सिल है क्या?"
राजेश- "नहीं मित्र! मेरे पास तुम्हारी पेन्सिल नहीं है।..ये देखो, केवल मेरे पास मेरी ही पेन्सिल है, जो कि मैंने आज सुबह स्कूल आते समय खरीदी थी।"
करन- "कल चित्रकला बनाते समय मेरे पास पेन्सिल थी परन्तु आज नहीं है, इसलिए पूछा! क्योंकि कल तुम मेरे पास बैठे थे और गलती से कहीं तुम्हारे पास चली तो नहीं गयी। तुम एक बार अपना बैग चेक कर लो।" राजेश- "लगता है करन.. तुम्हारा दिमाग खराब है। तुम एक पेन्सिल के लिए मेरे बैग की तलाशी लोगे?
जब मैंने कह दिया कि नहीं है मेरे पास.. तो नहीं है। आये दिन मैं तुम्हे अपने सामान देता आया हूँ ये सोच कर, कि तुम गरीब हो! खरीद नहीं सकते और आज तुम मुझ पर ही इल्जाम लगा रहे हो। मुझे अफसोस हो रहा है कि मैंने तुम्हें अपना दोस्त माना! तुम गरीब तो हो ही, गलीज भी हो, आज से हमारी तुम्हारी दोस्ती खत्म।" करन- "मैंने तुम पर कोई आरोप नहीं लगाया। बस! हक जताया कि गलती से बैग में चली गयी होगी। एक बार देख लो। मुझे बहुत तकलीफ हुई राजेश! तुम मेरी मदद दोस्ती के नाते नहीं, मेरी गरीबी की वजह से कर रहे थे।" इतना कह कर करन रोने लगा। कुछ देर बाद बच्चों की स्कूल से छुट्टी हो गयी। सारे बच्चे अपने-अपने घर चले गये। करन और राजेश भी अपने-अपने घर चले गये। राजेश ने घर पहुँचते ही देखा कि पिता जी एक नया बैग लाये हैं। राजेश बहुत खुश हो गया। जल्दी से पुराने बैग से अपना सारा सामान नये बैग में रखने लगा, तभी अचानक उसकी नजर पेन्सिल पर पड़ी।
राजेश- "ओह! ये पेन्सिल तो करन की है। मुझसे कितनी बड़ी गलती हो गयी। मुझे करन के पास जाकर माफ़ी माँगनी चाहिए। मैंने उस पर विश्वास न करके उसका दिल दुखाया है।" राजेश दौड़ कर गया। उसने करन से हाथ जोड़कर माफ़ी माँगी। करन ने राजेश के आँसू पोंछे और माफ़ करते हुए गले से लगा लिया।

संस्कार सन्देश

सच जाने बिना हमें कभी किसी से बहस नहीं करनी चाहिए।

लेखिका-
शमा परवीन (अनुदेशक)
उ० प्रा० वि० टिकोरा मोड़, तजवापुर, बहराइच